(Doctrine of Truth)

जेम्स के उपयोगिता के दर्शन में सर्वाधिक महत्व उनके सत्यता - सिद्धान्त को दिया गया है। उसके उत्कट अनुभववाद, उपयोगितावाद, स्वं सत्ता - विचार का पूर्णतया विकसित रूप उनके सत्यता - सिद्धान्त में है। अत: अब हम उस सिद्धान्त को स्पष्ट करने की चेष्टा करेंगे।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि सत्यता का उपयोगितावादी सिद्धान्त एक मौलिक तथा नवीन सिद्धान्त के रूप में उभरा। यों तो जेम्स के पहले पर्स ने भी सत्यता की अवधारणा को अपने ढंग से स्पष्ट किया और जेम्स के बाद अमेरिका में ड्वी ने और इंगलैण्ड में शिलर ने इसे और अधिक संवारा, किन्तु हम जेम्स के विचारों का उल्लेख करेंगे क्योंकि जेम्स का सत्यता सिद्धान्त उपयोगितावादी सत्यता - सिद्धान्त का मूल है।

प्रथमत: कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है। जेम्स की सत्यता - अवधारणा तार्किक भी नहीं ज्ञानमीमांसीय भी नहीं तथा तात्विक भी नहीं। तार्किक चिन्तन की परम्परा में सत्यता असत्यता को तर्क - वाक्य या प्रस्तावना (proposition) का लक्षण माना जाता है, वैसा लक्षण इसके आधार पर प्रस्तावना असत्य या सत्य सिद्ध होते

है। जेम्स सत्य की इस तार्किक सीमा की बात नहीं करता। ज्ञानमीमांसा में सत्य ज्ञान का लक्ष्य के रूप में स्वीकारा जाता है, जिसके प्राप्त होने ही से ज्ञान ज्ञान होता है। अतः यहाँ 'सत्य' की एक ज्ञान-मीमांसीय विधि निर्धारित की जाती है। जेम्स सत्य को एक स्वतंत्र ज्ञानमीमांसीय इकाई नहीं मानते, यह ज्ञान के साथ जुटा अवश्य है, किन्तु यहाँ ज्ञान का प्रचलित अर्थ ही बदल दिया गया। सामान्य ज्ञानमीमांसा में ज्ञान सत् का प्रतिबिम्ब-रूप माना जाता है - यदि वह प्रतिबिम्ब संगत है, तो वही ज्ञान की सत्यता है। उपयोगितावाद में, जैसा कि हम देखेंगे, ज्ञान की इस अवधारणा को ही परिवर्तित कर दिया गया है।